(1)

Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-I (Hons. P-Ist + Sub.)
Topic:- Unit-III (b) सातवाहन.
(Continue....)

Lecture No. 18.
Date- 23.07.2020
From page no. 1 to 2.

सातवाहन संस्कृति:

प्रशासन- सातवाहनों ने अपने साम्राज्य में एक स्वच्छ प्रशासन स्थापित किया। इनका प्रशासन मौर्यों की अपेक्षा सरल था। राज्य का अध्यक्ष राजा होता था और सभी शक्तियाँ उसमें केंद्रित थी, परन्तु वह निरंकुश नहीं था। सातवाहन शासकों ने धर्मशास्त्रों में वर्णित राजधर्म एवं वर्णाश्रम धर्म के पालन पर विशेष बल दिया। कुषाणों की तरह सातवाहनों ने भी राजत्व को दैवत्व के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी तुलना राम, भीम, केशव, अर्जुन इत्यादि देवताओं और वीरों के साथ की। सातवाहन प्रशासन में मातृसत्तात्मक तत्व ज्यादा मजबूत थे। राजा अपने नाम के साथ अपनी माता का नाम भी रखते थे जैसे गौतमीपुत्र शातकर्णी, वसिष्ठिपुत्र पुलुमावि, आदि।

राजा को प्रशासन में सहायता देने के लिए सचिव एवं अमात्य होते थे। सचिवों एवं अमात्यों के अतिरिक्त महाभोज, महासेनापति, भंडागारिक, गौल्मिक जैसे पदाधिकारियों का भी उल्लेख मिलता है। नैगम या निगम अर्थात व्यापारी, सार्थवाह अर्थात व्यापारियों के काफिले का प्रमुख, श्रेष्ठिन अर्थात व्यापार निगम का प्रमुख आदि गैर सरकारी कर्मचारी थे। इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड के नगर की व्यवस्था के अधिकारी आल्डरमैन की भांति सार्थवाह का काम नगरों की व्यवस्था और देखरेख करना था। प्रशासनिक सुविधा के लिए संपूर्ण साम्राज्य विभिन्न आहारों में विभक्त था जिनपर अमात्य शासन करते थे। आहार ग्रामों में विभक्त थे। ग्राम प्रशासन गौल्मिकों के अधीन था। कटक और स्कन्धवार सैनिक शिविर और अस्थायी प्रशासनिक केन्द्र थे।

सातवाहनों ने पहली बार भूमि-अनुदान की प्रथा चलाई। भूमिदान बौद्धों और ब्राह्मणों को समान रूप से दिये गये।

समाज:

सामाजिक विभाजन का ढाँचा मिश्रित था। सामाजिक विभेद का आधार आर्थिक के साथ-साथ वंशानुगत भी था। सातवाहन शासकों ने उत्तरी भारत में प्रचलित ब्राह्मण व्यवस्था के अनुरूप ही वर्ण-व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था के पालन पर बल दिया। गौतमीपुत्र शातकर्णी इस बात का दावा करता है कि उसने वर्ण व्यवस्था की स्थापना की तथा ब्राह्मणों के प्रभुत्व को पुनः स्थापित किया। सातवाहन शासक भी ब्राह्मण होने का ही दावा करते हैं। चतुर्वर्ण के अतिरिक्त व्यवसाय के आधार पर भी अनेक वर्णों का उद्भव हुआ। गांधिक भी समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। सबसे निम्न श्रेणी में माली, बढ़ई, लुहार, मछुआरे आदि आते थे। सामाजिक जीवन में नारियों का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। आवश्यकता पड़ने पर वे शासन-सूत्र में भी अपने हाथों में ग्रहण करती थीं।

आर्थिक जीवन:

सातवाहनों का काल आर्थिक समृद्धि का था। इस समय कृषि,

शिल्प, व्यवसाय और वाणिज्य का पूर्ण विकास हुआ। कृषि मुख्य व्यवसाय था और चावल एवं कपास की खेती मुख्य रूप से होती थी। सातवाहन युगीन संपन्नता बहुत कुछ व्यापार वाणिज्य पर आश्रित थी। इस समय रोमन साम्राज्य से व्यापार का विकास हुआ। भड़ौच, कल्याण, सोपारा आदि सातवाहन साम्राज्य के महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। जबकि वैजयन्ती, नासिक, जुन्नार आदि आन्तरिक व्यापार के केन्द्र थे। व्यापार विनिमय में सोने, चान्दी व तांबे के सिक्कों का प्रयोग होता था। सोने के सिक्कों को सुवर्ण तथा चांदी व तांबों के सिक्कों को कर्षापण कहते थे। सातवाहनों के अधिकतर सिक्के सीसे के मिलते हैं।

कला एवं स्थापत्य:

सातवाहनों के काल में अनेक स्तूप एवं चैत्य बनाए गए। गुफाओं को काटकर अनेक मन्दिर एवं गुफाएँ बनाई गयीं। इस समय के बनाये गये स्तूपों में सबसे प्रमुख अमरवती और जग्गैयपेटा के स्तूप हैं। नासिक, कार्ले एवं कन्हेरी में सुन्दर चैत्य बने। गौतमीपुत्र शातकर्णी ने पांडुलेप का दृश्यगृह बनवाया। यज्ञश्री शातकर्णी ने चिन्न नामक स्थान में एक अभिलेख खुदवाया।

धर्म: इस काल में सातवाहनों ने दक्षिण भारत में ब्राह्मण धर्म को पुनः स्थापित किया। सातवाहन अभिलेखों में इन्द्र, सूर्य, वरुण आदि वैदिक देवताओं एवं अश्वमेध, वाजपेय आदि यज्ञों का उल्लेख मिलता है। २० प्रकार के अन्य यज्ञों का भी उल्लेख मिलता है। शिव और नाग की पूजा सबसे अधिक होती थी। सातवाहन शासक धार्मिक सहिष्णु थे। इन्होंने बौद्धों को भी भूमि अनुदान दिए तथा स्तूप, गुहाएँ एवं विहार बनवाए। इस युग की धार्मिक अवस्था की एक सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएँ यह थी कि इस युग के समय विदेशियों ने बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू धर्म ग्रहण किया।

शिक्षा - भाषा - साहित्य: सातवाहनों की राजकीय भाषा संस्कृत नहीं थी बल्कि प्राकृत थी। लिपि के रूप में ये ब्राह्मी लिपि का प्रयोग करते थे। संस्कृति के मुख्य केन्द्र प्रतिष्ठान गोवर्धन एवं नासिक थे। सातवाहन वंश का सबसे प्रतापी राजा 'हाल' ने 'गाथा सप्तशती' लिखी। वृहत्कथा के लेखक गुणाढ्य उसके राजसभा को सुशोभित करते थे। सातवाहन काल के अन्तिम चरण में बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन ने संस्कृत में रचनाएँ की।